International Journal of Research in Social Sciences and Humanities http://www.ijrssh.com

(IJRSSH) 2016, Vol. No. 6, Issue No. I, Jan-Mar e-ISSN: 2249-4642, p-ISSN: 2454-4671

छायावाद की अवधारणा में वैचारिक विविधता का सौन्दर्य छायावाद का नामकरण : विविध मत

डा. मनिन्द्र जीत कौर

व्याख्याता हिन्दी, राजकीय महाविद्यालय, सूरतगढ़

THE BEAUTY OF IDEOLOGICAL DIVERSITY IN THE CONCEPT OF CHHAYAVAD NAMING OF CHHAYAVAD: VARIOUS OPINIONS

Dr Maninder Jeet Kaur

Lecturer, Dept of Hindi, Government College, Suratgarh, Shriganganagar

ABSTRACT

The new poetic style that took shape in Hindi poetry from the third decade of the twentieth century is known as 'Chhayavad'. This poetry originated between the two world wars, but this does not mean that this current of poetry suddenly emerged and disappeared after 1938. This current was flowing before 1918 and continued to flow after 1938. The Chhayavadi poetic tradition primarily developed between 1918 and 1938. Scholars have expressed their views on the term 'Chhayavad'. To clarify the nature of Chhayavad the discussion can be divided into two categories: critics of Chhayavad and poets of Chhayavad, who have presented their perspectives on this subject.

Keywords: Chhayavad; spirituality; mysticism; nature; romantic

सारांष

बीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक से हिन्दी कविता में जिस नयी काव्य चेतना ने आकार ग्रहण किया उसे हम 'छायावाद' के नाम से जानते हैं। यह दो महायुद्धों के बीच की कविता है, किंतु इसका तात्पर्य यह नहीं कि कविता की यह धारा एकदम से फूटी और सन् 1938 के बाद विलीन हो गई। यह धारा सन् 1918 से पहले भी बह रही थी और सन् 1938 के बाद भी बहती रही। सन् 1918 से 1938 के बीच प्रमुख रूप से छायावादी काव्यधारा का विकास हुआ। 'छायावाद' नामकरण के विषय में विद्वानों ने अपने–अपने विचार दिये हैं। छायावाद के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए विचार को दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता

IJRSSH

है– एक तो छायावाद के आलोचक और दूसरे छायावाद के कवि, जिन्होंने इस संबंध में अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है।

शब्द : छायावाद, आध्यात्मिकता, रहस्यवाद, प्रकृति, रोमांटिक

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल –

आचार्य शुक्ल ने छायावाद का ग्रहण दो अर्थों में किया है– एक तो आध्यात्मिकता प्रधान–प्रतीकवादी हिन्दी की कविताएं और दूसरा एक विशेष प्रकार की अभिव्यक्ति शैली। ''छायावाद शब्द का प्रयोग दो अर्थों में समझना चाहिए – एक तो रहस्यवाद के अर्थ में जहाँ उसका संबंध काव्य वस्तु से होता है अर्थात जहाँ कवि उस अनन्त और अज्ञात प्रियतम को आलम्बन बनाकर अत्यन्त चित्रमयी भाषा में प्रेम की अनेक प्रकार से व्यंजना करता है। छायावाद का दूसरा प्रयोग–काव्य शैली या पद्धति–विशेष के व्यापक अर्थ में है।[1] छायावाद समझकर जो कविताएं हिन्दी में लिखी जाती हैं उनमें से अधिकांश का 'छायावाद' या रहस्यवाद' से कोई सम्बन्ध नहीं होता। उनमें से कुछ तो विलायती (अभिव्यंजनावाद' के आदर्श पर रची हुई बंगला कविताओं की नकल और कुछ अंग्रेजी कविताओं के लाक्षणिक चमत्कारपूर्ण वाक्य शब्द–प्रतिशब्द उठाकर, जोड़ी जाती है। इसके जोड़ने वाले यह नहीं जानते कि 'छायावाद' या 'रहस्यवाद' शब्द काव्यवस्तु (मैटर) का सूचक है, अतः जहाँ काव्य वस्तु में कोई 'वाद' नहीं है, केवल व्यंजना शैली के वैचित्र्य का अनुकरण है, वहाँ अभिव्यंजनावाद की नकल है।[2]

आचार्य नन्ददुलार वाजपेयी :

मानव अथवा प्रकृति के सूक्ष्म किंतु व्यक्त सौन्दर्य में आध्यात्मिकता का भान मेरे विचार से छायावाद की एक सर्वमान्य व्याख्या हो सकती है।[3] इनके अनुसार आधुनिक जीवन की अभिव्यक्ति इस काव्य में निरन्तर हो रही है। आज हम जिसे छायावाद की कविता कहते हैं, वह क्या कोई एक वस्तु है? ऐसा तो नहीं है। थोडी सी भावात्मकता, थोड़ी सी सांकेतिकता और थोड़ा सा रहस्य, थोडी दुरुहता, थोड़ी सी कोमकान्त पदावली और थोड़ा सा अतीतानुराग, थोड़ा सा प्रकृति प्रेम, उच्छृंखलता– इस प्रकार थोड़ी–थोड़ी अनेक वस्तुएं उसमें सम्मिलित हैं।[4]

IJRSSH

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदीः

1900–1920 ई. की खड़ी बोली की कविता में विषयवस्तु की प्रधानता बनी हुई थी। परन्तु इसके बाद की कविता में कवि के अपने राग–विराग की प्रधानता हो गई। विषय अपने आप में कैसा है, यह मुख्य बात नहीं थी बल्कि मुख्य बात यह रह गई थी कि विषयी (कवि) के चित्त के राग–विराग से अनुरंजित होने के बाद वह कैसा दिखता है। विषय इसमें गौण हो गया, विषयी प्रधान।[5] छायावादी नाम उन आधुनिक कविताओं के लिए बिना विचारे ही दे दिया गया था (क) जिनमें मानवतावादी दृष्टि की प्रधानता थी (ख) जो वक्तव्य विषय को कवि की व्यक्तिगत चिन्तना और अनुभूति के रंग में रंगकर अभिव्यक्त करती थी। (ग) जिसमें मानवीय आचारों, क्रियाओं, चेष्टाओं और विश्वासों के बदले हुए मूल्यों को अंगीकार करने की प्रवृत्ति थी (घ) जिनमें छन्द, अलंकार, रस, ताल, तुक आदि सभी विषयों में गतानुगतिकता से बचने का प्रयत्न था। (ङ) जिसमें शास्त्रीय रुढ़ियों के प्रति कोई आस्था नहीं दिखाई गई थी।[6]

इस प्रकार द्विवेदी युगीन तथ्यपरक (विषय प्रधान) कविता से भिन्न कवि (विषयी) के व्यक्तिगत राग– विराग से अनुरंजित होकर प्रकट होने वाली कविता का नाम छायावाद है।

बाबू गुलाबरायः

संभव है छायावाद को लोगों ने उसकी इस अस्पष्टता के कारण इस नाम से पुकारा हो और फिर वही नाम प्रचलित हो गया हो। कुछ भी हो इसमें छाया की सी कोमलता और स्वप्न प्रियता रहती है। छायावाद कोरे वस्तुवाद से सन्तुष्ट नहीं रहता, वह वस्तु में एक आध्यात्मिकता और स्थूल में सूक्ष्म की स्वप्निल आभा देखता है।[7]

अतः छायावाद की अभिव्यक्ति का अपना एक ढंग है जो कि उपदेशात्मक न होकर व्यंजनात्मक है।

शान्तिप्रिय द्विवेदीः

IJRSSH

मनुष्य जब–जब अचेतन होने लगता है। तब–तब संसार में गाँधीवाद आता है, कभी बुद्ध के रूप में, कभी ईसा के रूप में। इसी प्रकार जब–जब काव्य मैटर आफ फैक्ट होने लगता है, तब–तब छायावाद का उदय होता रहता है. 'छाया' शब्द यदि उसकी कला के स्वरूप को सूचित करता है तो 'वाद' उसके अन्तः प्रकाश (अभिव्यक्त) को। छाया की तरह उसके कला रूप में परिवर्तन होता रहता है, किंतु उसका प्रकाश असुण्ण रहता है।[8]

विनय मोहन शर्मा :

''बस स्वर्गीय संगीत की प्यास ने हिन्दी में उस युग को जन्म दिया जो छायावाद और रहस्यवाद के नाम से आख्यात हुआ। द्विवेदी–युग की प्रतिक्रिया इसमें स्पष्ट रूप से झलकने लगी।[9] *अतः छायावाद की रचना के लिए निम्न दो बातों का होना आवश्यक है: 1. रचना को आन्तरिक अनुभूति मय होना चाहिए 2. रचना की अभिव्यक्ति में निरालापन होना चाहिये।*[10]

डा. नगेन्द्रः

निष्कर्ष यह है कि छायावाद एक विशेष प्रकार की भाव पद्धति है। जीवन के प्रति एक विशेष भावात्मक दृष्टिकोण है। जिस प्रकार भक्ति काव्य जीवन के प्रति एक प्रकार का भावात्मक दृष्टिकोण था और रीतिकाव्य एक दूसरे प्रकार का, उसी प्रकार छायावाद भी एक विशेष प्रकार का भावात्मक दृष्टिकोण है।''[11]

डा. देवराज :

छायावाद क्या है, इस प्रश्न के उत्तर में कहा जा सकता है कि वह 1. गीतिकाव्य है, 2. प्रकृति काव्य है और 3. प्रेमकाव्य अथवा रहस्यवादी काव्य है।[12]

रामविलास शर्माः

छायावाद हिन्दी साहित्य की रोमांटिक धारा है। वह मूलतः रीतिकालीन परम्परा की विरोधी है। वह एक मानवतावादी धारा है जिसका एक कमजोर पक्ष रहस्थवाद है।[13]

IJRSSH

निष्कर्षः *आलोचकों के मतानुसार छायावाद उस काव्यधारा का नाम है जो दरबारी संस्कृति की गोद में पलने वाली रीतियुगीन कविता तथा द्विवेदी युगीन सुधारवादी कविता के विरोध में आविर्भूत हुई तथा जिसने विद्रोह, विप्लप, क्रान्ति एवं आमूल सामाजिक परिवर्तनों के प्रति प्रेम प्रदर्शित किया। छायावाद के प्रमुख वर्ण्य–विषय अध्यात्मवाद, रहस्यवाद, मानवतावाद, वैयक्तिक स्वाधीनता, उन्मुक्त राग–विराग, काल्पनिक मनो जगत, प्रकृति और नारी हैं।*

कवियों के मत

जयशंकर प्रसादः

कविता के क्षेत्र में पौराणिक युग की किसी घटना अर्थवा देश–विदेश की सुन्दरी के बाह्य वर्णन से भिन्न जब वेदना के आधार पर स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्ति होने लगी तब हिन्दी में उसे छायावाद के नाम से अभिहित किया गया। छाया भारतीय दृष्टि से अनुभूति और अभिव्यक्ति भगिमा पर अधिक निर्भर है। ध्वन्यात्मकता, लाक्षणिकता, सौन्दर्यमय प्रतीक विधान तथा उपचार वक्रता के साथ सहानुभूति की विवृति छायावाद की विशेषताएं हैं।[14]

सुमित्रानंदन पंतः

छायावाद के नाम से मैं संतुष्ट नहीं है। यह तो द्विवेदी युग के आलोचकों द्वारा नई कविता के उपहास का सूचक है। वैसे छायावाद के नाम से जो कविता पुकारी जाती है वह नये युग की मांग थी।[15]

प्रारम्भ में छायावाद एक कुख्यात नाम था किंतु छायावादी कनिता में प्रस्फुटित होने वाली युगानुकूल नवीनता ने उसे अभिनन्दनीय बना दिया।

सूर्यकान्त त्रिपाठी निरालाः

जिस कविता को छायावादी कविता कहते हैं उसकी उत्पत्ति समाज, राष्ट्र, धर्म, व्यवसाय तथा साहित्य में विद्यमान अनावश्यक नियंत्रणों के कारण हुई साहित्य में इस

IJRSSH

समय यही प्रयत्न जोर पकड़ता जा रहा है और यही मुक्ति के प्रयास के चिह्न भी हैं।[16] *छायावादी कविता की भाषा पूर्ववर्ती कविता की अपेक्षा अधिक विकसित है।*

महादेवी वर्मा:

मनुष्य का जीवन चक्रवत घूमता रहता है। स्वछन्द घूमते –घूमते वह थक कर अपने लिए सहस्त्र बन्धनों का आविष्कार कर डालता है और फिर बन्धनों से ऊबकर उसको तोड़ने में अपनी सारी शक्तियां लगा देता है छायावाद के जन्म का मूल कारण भी मनुष्य के इसी स्वभाव में छिपा हुआ है। उसके जन्म से प्रथम कविता के बन्धन सीमा तक पहुंच चुके थे और सृष्टि के बाह्याकार पर इतना अधिक लिखा जा चुका था कि मनुष्य का हृदय अपनी अभिव्यक्ति के लिए रो पड़ा। स्वधन्द छन्द में चित्रित उन मानव अनुभूतियों का नाम छाया उपयुक्त था भौर मुझे तो आज भी उपयुक्त ही लगता है।[17]

रामकुमार वर्मा:

छायावाद वास्तव में हृदय की एक अनुभूति है। वह भौतिक संसार के क्रोड़ में प्रवेश कर अनन्त जीवन के तत्व ग्रहण करता है और उसे हमारे वास्तविक जीवन से जोड़कर हृदय के प्रति एक गहरी संवेदना और आशावाद प्रदान करता है।[18] *इसके साथ ही जहां भावपक्ष अनुभूति में मनोवैज्ञानिक और प्राकृतिक चित्रों से परिपूर्ण हो गया है वहाँ भाषा भी भावों के अनुकूल अत्यन्त मधुर एवं संगीतपूर्ण हो गई है। छायावाद ने वास्तव में हिन्दी कविता को काव्य की उच्चतम संभावनाओं से सम्पन्न कर दिया है। उच्च कोटि की कल्पना, प्रकृति के रहस्यों का उद्घाटन, सुख दुख की एक तीव्र संवेदना, सौन्दर्य का एक आलोकमय दृष्टिकोण एवं चित्रात्मकता छायावाद की विभूतियाँ हैं जो खड़ी बोली हिन्दी कविता को प्राप्त हुई।*[19]

छायावाद के संबंध में विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि जहां एक तरफ आध्यात्मिकता आया। मकर है तो दूसरी तरफ दार्शनिक अनुभूति भी है। भावनात्मक दृश्टिकोण है, स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है। छायावाद के स्वरूप के संबंध में डा. गणपति चन्द्र गुप्त के शब्दों में कह सकते हैं कि 'भारतीय

IJRSSH

काव्य परम्परा में हिन्दी कविता की छायावाद धारा अपने पूर्ववर्ती युग की प्रतिक्रिया में प्रस्फुटित एक विशेष भावात्मक दृष्टिकोण, एक विशेष दार्शनिक अनुभूति और एक विशेष शैली है, जिसमें लौकिक प्रेम के माध्यम से अलौकिक प्रेम के ब्याज से लौकिक अनुभूतियों का चित्रण है, जिसमें प्रकृति का मानवीकरण है, वेदना की विवृति है, सौन्दर्य चित्रण है, गीति–तत्वों की प्रमुखता है और जिसके व्यक्तिवाद के स्व में सर्वसन्निहित है।''

– सहायक ग्रन्थ सूची –

1. *आचार्य रामचन्द्र शुक्लः हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ० 668*
2. *आचार्य रामचन्द्र शुक्ल : चिन्तामणि, पृ०108*
3. *नंद दुलारे वाजपेयी : हिन्दी साहित्य, बीसवीं शताब्दी, पृ.163*
4. *नंददुलारे वाजपेयीः हिन्दी के दो प्रमुख वाद, संपा प्रेमनारायण टंडन, पृ.52*
5. *आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदीः हिन्दी साहित्य, पृ.455*
6. *हजारी प्रसाद द्विवेदीः हिन्दी साहित्य, पृ० 461–462*
7. *गुलाबरायः हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास, पृ. 325*
8. *शान्तिप्रिय द्विवेदी : संचारिणी, पृ. 219–222*
9. *विनयमोहन शर्माः साहित्यावलोकन, पृ० 9–10*
10. *विनय मोहन शर्मा : दृष्टिकोण, पृ.17*
11. *डा. नगेन्द्रः आधुनिक हिन्दी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियां, पृ. 15*
12. *डा. देवराजः छायावाद का पतन, पृ.11*
13. *रामविलास शर्माः आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना, 2.196*
14. *सं नंददुलारे वाजपेयी, जयशंकर प्रसादः काव्य कला तथा अन्य निबन्ध पृ. 119*

IJRSSH

15. सं लक्ष्मीनारायण सुधांशु : अवन्तिका (जनवरी 1954) पृ०190

16. सूर्यकान्त त्रिपाठी निरालाः परिमल, भूमिका, पृ. 17–18

17. महादेवी वर्माः यामा, अपनी बात, पृ.11–12

18. रामकुमार वर्मा, विचार–दर्शन, पृ. 72

19. रामकुमार वर्माः विचार–दर्शन, पृ. 75

IJRSSH